# मोरंगे

सितम्बर–अक्टूबर, 2025

# अनुक्रम


**गीत कविताएँ**

- कांई छ
- मामा आया
- बरसात का कहर
- गोल मटोल आलू
- काला बंदर

**कहानियाँ**

- हाथी और मगरमच्छ
- हाथी माँ और जंगल की सीख
- जानवरों की एकता
- नटखट बकरी

**याद की धूप छाँव में**

बच्चों की समझदारी और सहयोग

गाँव से शहर तक

**बात लै चीत लै**

डोकरी और चार चोर

टीबी और एंटीना की मजेदार बातचीत



**सम्पादन :** राजेश कुमावत
**डिज़ाइन :** लोकेश राठौर
**वितरण** : अंकुश शर्मा
**आवरण चित्र :** गोलू गुर्जर, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बोदल।
**वर्ष 16 अंक 183–184**

**प्रबंधन**
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

**पत्रिका का पता**
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,
मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान
322001

‘मोरंगे’ का प्रकाशन ‘यात्रा फाउण्डेशन’ आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

# गीत कविताएँ

## कांई छै

कांई छै भई कांई छै

बिल्ली की सगाई छै

बिल्ली को नानो मर ग्यो

खिचड़ी रंदाई छै

खिचड़ी में माखी गर गी

कुत्ता को चटवाई छै

कुत्ता की जीभ बड़गी

डाक्टर कू बुलाई छै

डाक्टर की सुंई टूटगी

मैडम कू बुलवाई छै

मैडम की साड़ी उड़गी

तीन ताड़ी बजाई छै

सोनाक्षी बैरवा, कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर हिम्मतपुरा

**नीरू गुर्जर,** फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बाढ़पुर

## मामा आया

मामा आया मामा आया
पत्तागोभी लेकर आया
रास्ते में मिला चोर
मामा के पीछे मोर
मोर मारे चोंच से
मामा गिरा जोर से
माफी मांगे मोर से
मामा को आई अकल
आधी गोभी चोर को दी
और आधी गोभी मोर को दी

अजय बैरवा, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

रजनी गुर्जर, कक्षा–10, उमंग सेंटर श्यामपुरा

## बरसात का कहर

इस बार बरसात का भारी जोर था
जिसका कहर चारों ओर था
अगस्त का महिना और एनएच–552
सितम्बर में कुछ ओर था
उघाड़ की पुलिया टूटी
कुशालीदरा का नाला टूटा
गांव मखौली पूरा तालाब था
घर स्कूल की दीवारें टूटी
पानी क्या जल सैलाब था

राजेश कुमावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

## गोल–मटोल आलू

गोल–मटोल आलू
मेरा नाम है कालू
गोल–मटोल आलू
मैं हूँ बहुत चालू
गोल–मटोल आलू
सामने आया भालू
गोल–मटोल आलू
डर के भागा भालू
सोचा क्यों न खा लूँ।

पिंकी महावर, शिक्षिका, उमंग कार्यक्रम श्यामपुरा।

**पूजा बंजारा,** नवरंग शिक्षण केन्द्र भदलाव

## काला बंदर

एक काला बंदर था
बरगद के पेड़ पर रहता था
गाँव में आना–जाना था
ककड़ी, मूली खाता था
एक दिन झगड़ा हो गया
बंदर बहुत डर गया
लड़ाई छोड़कर वह तो
दूर कहीं भाग गया

आरती गुर्जर, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

# कहानियाँ

## हाथी और मगरमच्छ

एक समय की बात है। एक नदी के किनारे एक हाथी रहता था। वह रोज नदी में पानी पीने आता था। उसी नदी में एक मगरमच्छ भी रहता था। जब हाथी पानी पीता तो मगरमच्छ उसे देखता रहता। उस नदी में रंग–बिरंगी कई मछलियाँ भी थी। एक दिन मगरमच्छ ने सोचा कि जैसे ही हाथी आज पानी पीने के लिए आएगा मैं उसे पकड़ लूंगा। हाथी के आते ही मगरमच्छ उस पर झपट पड़ा। यह घटना मछलियों ने भी देखी। उन्होंने सोचा कि हाथी को बचाना चाहिए। तभी मछली रानी को एक विचार आया। उसने कहा, हम सब मिलकर मगरमच्छ पर हमला कर देते हैं। फिर क्या था, सारी मछलियों ने मिलकर मगरमच्छ पर जोरदार हमला कर दिया। मछलियों के अचानक हमले से मगरमच्छ घबरा गया और पानी में बहुत दूर जाकर गिर पड़ा। इस तरह हाथी की जान बच गई। हाथी ने सभी मछ़लियों को धन्यवाद कहा और शुक्रिया अदा किया।

सामूहिक ग्रुप, फैलोशिप सेंटर हिम्मतपुरा।

**आशिष गुर्जर,** कक्षा–4, फैलोशिप सेंटर बोदल

## हाथी माँ और जंगल की सीख

समुद्र के बीचों–बीच एक टापू पर घना जंगल था। उसी जंगल में एक हाथी का बच्चा अपनी माँ के साथ रहता था। माँ और बेटा दोनों एक–दूसरे के साथ बहुत खुश रहते थे। जब उन्हें भूख लगती तो वे अपनी सूंड से पेड़ों की डालियाँ हिलाते और डालियाँ हिलते ही फल नीचे गिर जाते। जिन्हें वे बड़े मजे से खाते। जब प्यास लगती तो समुद्र का पानी पीकर अपनी प्यास बुझा लेते थे। एक दिन माँ और बेटा समुद्र में नहा रहे थे। तभी उन्हें कुछ आवाजें सुनाई दी। लेकिन उन्होंने उन आवाजों को अनसुना कर दिया और नहाते रहे। थोड़ी देर बाद फिर से आवाजें आई। इस बार उन्होंने ध्यान से सुना और देखा तो पाया कि कुछ लोग जंगल से फल तोड़कर ले जा रहे हैं। धीरे–धीरे यह रोज का काम बन गया था। तब हाथी के बच्चे ने अपनी माँ से हिम्मत करके कहा कि अगर ये लोग रोज ऐसे ही फल ले जाते रहे तो हम भूखे मर जायेंगे। अब आप ही कुछ करो। अगले दिन जब वे लोग फिर से फल तोड़ने आए तो हाथी की माँ ने उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो और रोज–रोज यहाँ से फल क्यों तोड़कर ले जाते हो? अगर तुम सारे फल ले जाओगे तो हम क्या खायेंगे? तब उन लोगों में से एक व्यक्ति बोला, समुद्र के बीच एक और टापू है जहाँ हम रहते हैं। वहाँ हमारी एक चौपाटी थी। यहाँ बाहर से कई लोग घूमने–फिरने आते थे और खाना भी खाते थे। जिससे हमारा गुजारा चलता था। लेकिन एक दिन समुद्र में बहुत बड़ा तूफान आया और सब कुछ बहा ले गया। कुछ लोग दूसरे टापू पर चले गए लेकिन हम कुछ लोग यहीं रह गए। अब हम यहाँ से फल ले जाकर फिर से अपनी चौपाटी बना रहे हैं ताकि हमारा जीवन पहले की तरह चल सके। यह सुनकर हाथी की माँ ने कहा, आप लोग फल ले जाना चाहते हैं तो ले जाइए लेकिन बदले में यहाँ नए पेड़ भी लगाइए ताकि हमारा और आपका दोनों का जीवन चलता रहे। सभी लोग इस बात पर सहमत हो गए। उन्होंने इस टापू के साथ–साथ अपने टापू पर भी बहुत सारे नए पेड़ लगाए। धीरे–धीरे सभी पेड़ बड़े हो गए और फल देने लगे। इस तरह इंसान और जानवर एक–दूसरे की मदद से खुशी–खुशी रहने लगे।

लक्ष्मी, कक्षा–11, उमंग सेंटर श्यामपुरा।

**सुहाना,** कक्षा–9, उमंग सेंटर रांवल

## जानवरों की एकता

एक जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। वे सभी जानवर आपस में मिल–जुलकर और प्रेम से रहते थे। यह बात शेर को बिल्कुल पसंद नहीं थी क्योंकि जब भी शेर शिकार करने के लिए जाता तो सारे जानवर एक साथ मिलकर शेर को भगा देते थे। इस कारण शेर बहुत परेशान रहने लगा। एक दिन शेर ने सोचा कि अगर जानवर एक दूसरे से अलग हो जाएँ तो वह आसानी से शिकार कर सकेगा। इसलिए शेर ने जानवरों में फूट डालने की योजना बनाई। शेर ने पहले हिरन से कहा कि हाथी तुम्हारी खाने की सारी घास खा जाता है। फिर हाथी से कहा कि हिरन तुम्हारे बारे में बहुत ही बुरा बोलता रहता है। शेर इसी तरह जानवरों को बहकाने लगा और धीरे–धीरे जानवर आपस में झगड़ने लगे। अब वे पहले की तरह एक–दूसरे की मदद नहीं करते थे। कुछ दिनों में ही शेर की योजना काम करने लग गई। शेर अब आसानी से शिकार करने लगा। कोई भी जानवर एक दूसरे की सहायता नहीं करते थे। देखते ही देखते जंगल में जानवरों की संख्या बहुत कम हो गई। तब जाकर सभी जानवरों को अपनी गलती समझ में आई। उन्होंने फिर से मिल–जुलकर रहने का फैसला किया। इसके बाद जब भी शेर शिकार के लिए आता तो सभी जानवर एक साथ होकर उसे भगा देते थे।

विजय गुर्जर, कक्षाा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

## नटखट बकरी

रामू नाम का एक व्यक्ति था। वह रोजना अपनी नटखट बकरी को चराने के लिए जाता था। बकरी बहुत ही चंचल थी और नजरें चुराकर किसी न किसी का नुकसान कर ही देती थी। जब भी कोई बकरी की शिकायत लेकर रामू के पास आता था तो वह उसे ही खरी–खोटी सुनाकर भगा देता था। इसलिए आस–पास के लोग रामू और उसकी बकरी से परेशान भी थे। रामू जिस रास्ते से बकरी चराने जाता था। उस रास्ते में एक चाय की दुकान भी पड़ती थी और वह दुकान एक पहलवान की थी। जहाँ पर रूक कर वह चाय पीता था और अपने चार दोस्तों के साथ बैठकर गप्पे हांकता रहता था। रोज की तरह एक दिन रामू दुकान पर चाय पी रहा था। चाय पीते–पीते उसकी नजर अखबार पर पड़ी और वह अखबार पड़ने लगा। लेकिन वह भूल गया कि उसकी नटखट बकरी बड़ी शैतान है और उसने दुकान का सारा सामान इधर–उधर कर दिया। उस समय दुकान का मालिक वहाँ पर नहीं था। वह सामान लेने बाहर गया हुआ था। वापस आकर उसने देखा कि उसकी दुकान पर तो कोई भी सामान अपनी जगह पर नहीं है। सारा सामान तहस–नहस कर दिया। इस बात से उस दुकानदार को बहुत गुस्सा आया और उसने पूछा कि यह सब किसने किया तब जाकर रामू की नजर अखबार से हटी और यह सब देखकर दंग रह गया। फिर एक गांव के व्यक्ति ने कहा कि ये सब तो रामू की बकरी का किया धरा है। यह सुनकर पहलवान ने रामू की बकरी को बांध लिया। रामू उसके सामने खूब गिड़गिड़ाने लगा। परन्तु दुकानदार ने उसकी एक नहीं सुनी। यह बात पूरे गांव में फेल गई। फिर रामू की पत्नी ने भी दुकान पर आकर पहलवान से बकरी छोड़ने की प्रार्थना की और कहा कि मेरे घर का गुजारा इसी बकरी से चलता है। मेरे पास आपकी दुकान में एक नुकसान की भरपाई करने के पैसे भी नहीं हैं। मेरा एक दूध पीता बच्चा भी है जो फिल्हाल इसी बकरी के सहारे है। यह बात सुनकर पहलवान नरमा गया। पहलवान ने कहा कि ठीक है, मैं बकरी तो तुम्हें दे दूंगा परन्तु रामू को मेरी दुकान का सारा सामान व्यवस्थित करवाना पड़ेगा। यह सुनकर रामू की पत्नी ने रामू को समझाया और रामू ने दुकान की साफ–सफाई और सामानों को सही कर दिया। इसके बाद रामू अब बकरी का हमेशा ध्यान रखने लगा।

नन्दीनी, कक्षा–10, उमंग सेंटर श्यामपुरा।

**तरन्नुम बानो,** कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर कानसीर

# याद की धूप छाँव में

## बच्चों की समझदारी और सहयोग

स्कूल में बच्चों की छुट्टी का समय हो रहा था। आसमान में काले और घने बादल छाए हुए थे। मौसम देखकर अध्यापकों ने तुरंत निर्णय लिया कि बच्चों की छुट्टी कर देनी चाहिए। उन्हें चिंता थी कि अब तेज बारिश आ गई और खाड़ में पानी आ गया तो बच्चों को घर जाने में परेशानी होगी। यह कहकर उन्होंने बच्चों की छुट्टी समय से आधे घंटे पहले ही कर दी। मैं बच्चों के साथ उनको घर छोड़ने के लिए जा रही थी तभी रास्ते में अचानक हल्की बारिश शुरू हो गई। बारिश देखकर बच्चे पहले तो बहुत खुश हुए और भीगते हुए मस्ती करते हुए जाने लगे। लेकिन जल्द ही बच्चों को अपने स्कूल बैग और किताबों की चिंता हुई। उन्हें डर था कि बारिश से किताबें भीग जाएंगी और कुछ के पास खाली खाद के कट्टे थे जिनके पास बरसाती थी उन्होंने उसे पहन लिया। जिनके पास पॉलीथीन थी उन्होंने उसमें अपने बैग रख लिए। समस्या उन बच्चों के सामने थी जिनके पास बैग भीगने से बचाने के लिए कुछ भी नहीं था। तभी एक बच्चे के पास मौजूद कट्टे को देखकर दूसरे बच्चे ने सुझाव दिया कि क्यों न हम सब अपने बैग इस कट्टे में रख लें और मिलजुल कर इसे घर तक ले जाए। सभी बच्चों ने वैसा ही किया। उन्होंने सारे स्कूल बैग उस बड़े कट्टे में सावधानी से रखे और मिलकर उसे उठाने लगे। यह देखकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। यह दृश्य वास्तव में प्रेरणादायक था कि बच्चे किस तरह मिलजुलकर आपसी सहयोग के साथ काम कर रहे थे और एक दूसरे की मदद कर रहे थे।

मनीषा बैरवा, ब्लॉक सहायक, उदय किरणा फैलोशिप कार्यक्रम

## गाँव से शहर तक

एक गाँव था। वह गाँव घने जंगल के बीच था।उस गाँव का नाम मोरडूंगरी था। उस गाँव के लोग बहुत ही गरीब थे। वे लोग उस जंगल में अपनी भैंसे चराते व भैंसों का दूध सवाई माधोपुर बाजार में जाकर बेचते थे। उन्हीं पैसों से वे अपना गुजारा करते थे। एक बार सरकार के कुछ लोग हमारे गाँव में आये। उन्होंने कहा कि हम तुम्हें यहाँ से हटाकर शहर में बसायेंगे। यह बात सुनकर सभी गाँव वाले बहुत खुश हुए। उन्होंनें सोचा कि अब हम सब शहर में रहेंगे। कुछ दिनों बाद ही सरकारी लोगों द्वारा गाँव खाली करवा दिया गया और गाँव के लोगों को शहर में जमीन उपलब्ध करवा दी। लोगों ने अपने–अपने मकान बना लिए और उनमें रहने लग गये। कुछ समय तक तो वे खुश रहे क्योंकि वे भी अच्छा सुविधायुक्त शहरी जीवन जी रहे थे परन्तु धीरे–धीरे वे बीमार होने लगे। उन्हें गाँव के जैसा शुद्ध जलवायु वाला वातावरण नहीं मिला। बीमारी में ईलाज करवाने पर बहुत खर्चा भी होने लगा। शहर में वैसे भी खर्चा अधिक होता है। बिजली का बिल, गैस सिलेण्डर, बस किराया, पानी का बिल, मकान की पुताई–रंगाई, अनावश्यक सामग्री खरीद जैसे खर्चों की वजह से भी परेशान हो गये। उन्होंने सोचा कि इससे तो अच्छा हम अपने गाँव में खुश थे। वहाँ कम खर्चें में स्वस्थ जीवन तो जी रहे थे। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। अब वे लोग वापस अपने पुराने गाँव में नहीं जा सकते थे।

गोलू गुर्जर, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

**आस्था वर्मा,** कक्षा–4, शेरपुर

**आर्यन सैनी,** कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर छाण

**दिव्या सैनी,** कक्षा–9, उमंग सेंटर शेरपुर

# भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

**1.** राजा थारा बाग में, बचरी एक कथा, हाथ जोड़ भोजन करे, इस पहेली का अर्थ बता।

**2.** ऊपर ऊपर झाड़झटीलियाँ, नीचे बत्तीस खम्ब की गुफा ई फेड़ी को अर्थ बता दे, तोकू मान जाऊंगी फूफा।

3. माली की री माली की, आँख्या पेरे जाड़ी की, शाबाश मोरी जानकारी, फेर मिलेंगा शाम की।

4. धोड़ो दही की तरह, गूंजे नहार की तरह।

5. काली गाय, वन में बियाई, बच्चा छोड़, घर कु आई।

उदय किरण फैलोशिप सेंटर बोदल के बच्चों द्वारा

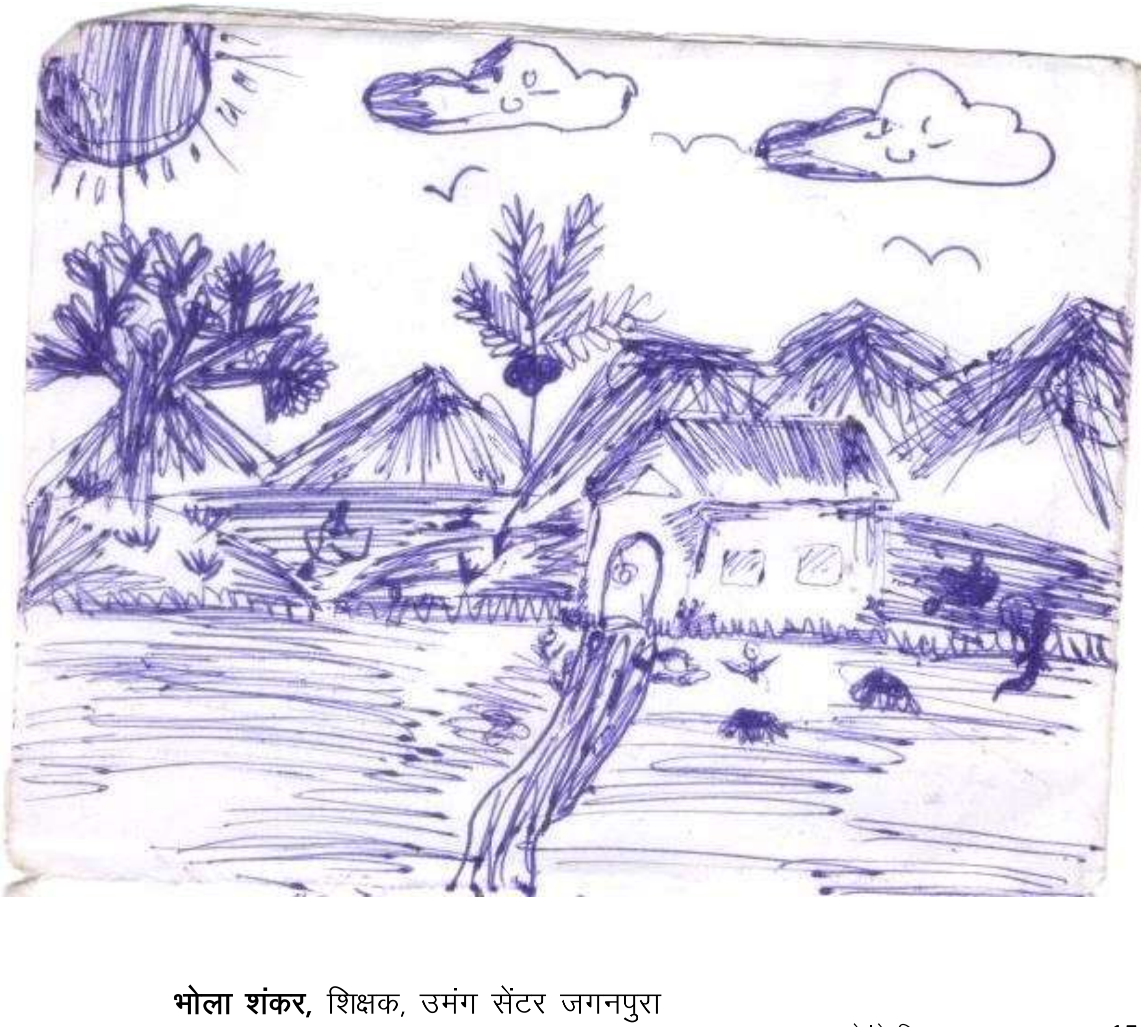

**भोला शंकर,** शिक्षक, उमंग सेंटर जगनपुरा

# चुटकले

मोनू – शादी में बहुत देर से खाना खा रहा था।

सोनू ने पूछा, भाई कितना खाना खाओगे?

मोनु – अरे भाई, मैं तो खाना खाते–खाते परेशान हूँ। पर क्या करूं शादी के कार्ड में लिखा था खाना खाने का समय 7–10 बजे तक। भाई दो मिनट और बचे हैं।

एक पिता अपने बेटे को पीट रहा था।

पड़ौसी ने पूछा, अरे भाई, इसे क्यों पीट रहे हो?

पिता – अरे भाई, कल इसका रिजल्ट आने वाला है?

पड़ौसी – अरे भाई, तो अभी क्यों पीट रहे हो?

पिता – अरे भाई, मैं आज शाम को ही दूसरे गाँव जा रहा हूँ। इसलिए पीट रहा हूँ।

विजय गुर्जर, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

**मुस्कान गुर्जर,** कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बाढ़पुर

# बात लै चीत लै

## डोकरी और चार चोर

एक गांव में सत्तर वर्ष की एक दादी रहती थी। सब उसे प्यार से डोकरी कहते थे। वह अपनी छोटी सी झौपड़ी में अकेली रहती थी। दिनभर के काम निपटाकर डोकरी रात को अपनी चारपाई पर आराम से सो गई और जोर–जोर से खर्राटे भरने लगी। उधर पास के चार शरारती चोर धीमे–धीमे से उसकी झौपड़ी में घुस गए। ये चोर पूरे इलाके में धूम–घूम कर चोरी करते थे। इसलिए हर गांव के लोग इन पर नजर रखते थे और चौकन्ने रहते थे। मगर डोकरी की झौपड़ी में तो चोरी करने लायक कोई चीज थी ही नहीं। चारों चोर, चारों कोनों में ढूंढने लगे। एक कोने में शक्कर, दूसरे कोने में दलिया, तीसरे कोने में भगोनी और चौथे कोने में गैस का छोटा सा चूल्हा मिला। एक चोर बोला अरे यहां तो चोरी लायक और कुछ भी नहीं है। क्यों ना हम इन चीजों से राबड़ी बना लें? बाकी चोर भी खुश हो गये कि आज तो चोरी की राबड़ी खायेंगे। चारों चोर मिलकर रात में चुपचाप राबड़ी बनाने लगे। थोड़ी ही देर में राबड़ी की खुशबू पूरी झौपड़ी में फैल गई। जब राबड़ी बनकर तैयार हो गई तो चारों चोर मजे से खाने लगे। तभी उनमें से एक चोर बोला, देखो डोकरी ने राबड़ी खाने के लिए मुंह खोल लिया है। सही कह रहे हो, बेचारी के दांत भी नहीं है, राबड़ी ही तो खा पायेगी। यह सोचकर उन्होंने गरम–गरम राबड़ी डोकरी में मुंह में डाल दी। गर्म राबड़ी से डोकरी का मुंह जल गया और वह जोर से चिल्लाई अरे! बचाओ, अरे! बचाओ। डोकरी की आवाज सुनकर गांव वाले दौड़कर आये लेकिन तब तक वे चारों शरारती चोर अंधेरे में भाग चुके थे।

संजना गुर्जर, कक्षा–3, फैलोशिप सेंटर बाढ़पुर

**आरूषी गुर्जर,** कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

## टी.बी. और एंटीना की मजेदार बातचीत

**टी.वी. (टेलीविजन) –** अरे एंटीना भईया, कल रात से मैं बहुत परेशान हूँ। लाख कोशिश कर लूं पर एक भी चैनल नहीं आ रहा। मेरी स्क्रिन पर तो सफेद–सफेद मच्छरों की फौज नाच रही है। ऐसे में लोग मेरे सामने कैसे बैठेंगे, बताओ।

**एंटीना –** दीदी मैं पूरा जोर लगा रहा हूँ, पर ये तेज बारिश और बिजली की गड़गड़ाहट सब मेरा खेल बिगाड़ देती है।

**टी.वी –** पर मैंने देखा कि कभी–कभी तुम जरा सा इधर–उधर हिलते हो तो मेरे चित्र आ जाते हैं। प्लीज आज भी वैसा ही कोई जुगाड़ कर दो ना।

**एंटीना –** अरे दीदी वो हमेशा नहीं होता। कभी–कभी छोटू कैमरे की बात मानकर थोड़ी–सी हिलजुल कर देता हूँ और एक दिन तुम नहीं चलोगी तो क्या फर्क पड़ेगा।

**टी.वी –** नहीं भैया। मैं बंद नहीं पड़ सकती। मेरा मालिक तो वैसे ही रिमोट को बार–बार दबाकर परेशान हो चुका है। दो बटन टूट चुके हैं। सैल अलग से बदलें। अब तो डर लग रहा है कहीं गुस्से में मुझे बंद ही न कर दे। सुना है बारिश रोकने के लिए इन्द्र देव से बात करनी पड़ती है, कुछ करिए ना।

**एंटीना –** अरे दीदी, इन्द्र देव जी मेरी बात नहीं मोनेंगे। पर मेरे पास एक बढ़िया जुगाड़ है। बाजार में एक नई जियो की छतरी आई है। उसे लगाओ तो ढेर सारे चैनल आते हैं। अगर मैं बारिश में बार–बार गिर जाऊँ तो मालिक तंग आकर खुद ही वो छतरी ले आएगा और मुझे भी आराम मिल जाएगा।

**टी.वी. –** कुछ भी करो, बस जल्दी करो।

और फिर एक दिन, हल्की सी हवा चली और एंटीना जोर से धप्प करके गिर पड़ा।

**एंटीना –** दीदी, सुना क्या, क्या मालिक अब दूसरी छतरी लाने वाला है।

**टी.वी. –** हाँ भैया, बच्चे दो दिन से चैनलों के लिए रो रहे हैं, लगता है कल ले आएगा।

अगले दिन मालिक सचमुच जियो की छतरी लेकर आ गया। उसने एंटीना को कमरे के अंदर (आराम से रख दिया। एंटीना भी बहुत खुश था, बारिश का झंझट ही खत्म।

टी.वी. फिर से चमककर चलने लगी और मालिक ने ऊपर गमले तक सजा दिए क्योंकि अब तो ढेर सारे चैनल जो आने लगे थे।)

जगदीश कोली, शिक्षक, उमंग सेंटर मखौली

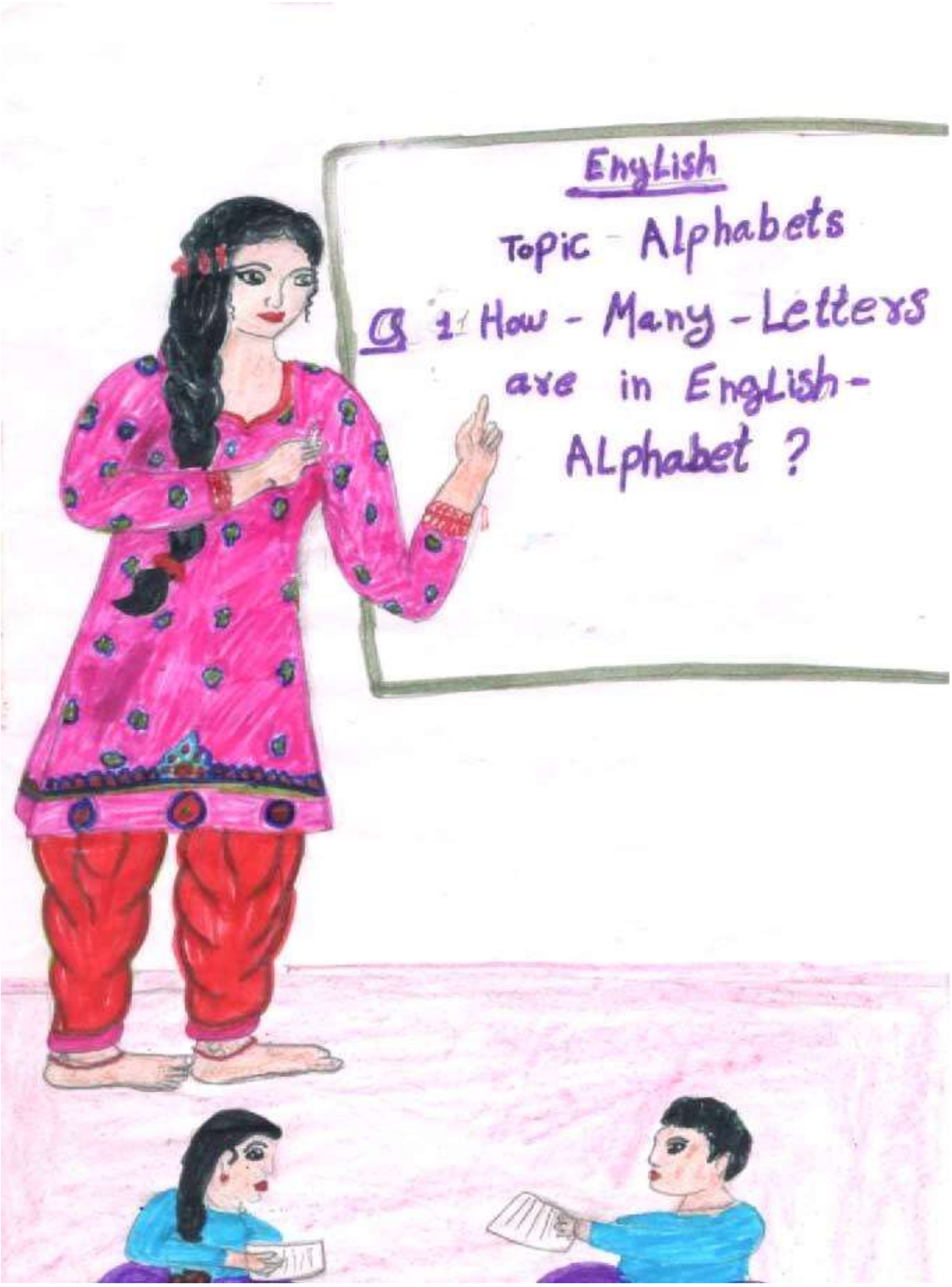


**गोलू नायक,** फैलो, फोरम थियेटर टीम

पहेलियों के जवाब –

1. गिलहरी
2. मुंह
3. चारपाई
4. खाट / शंख
5. बंदूक